बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
बाँदा – २१०००१ (उ0प्र0)

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.:94/2023) **Year: 5th**

जिला: बाँदा	जारी करने की तिथि: 16/11/2023

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	शाक-भाजी	➢ प्रचुर मात्रा में कंपोस्ट प्रयोग करके खेत की तैयारी कर लें, क्यारियां तैयार करके गोभी, बैंगन, टमाटर, शिमला मिर्च आदि की तैयार पौधों की अविलंब रोपाई करें । ➢ सब्जी मटर, मूली, पालक, गाजर, राई साग, फ्रेंचबीन की भी बुआई करें। ➢ टमाटर, बैगन, शिमला मिर्च/मिर्च तथा गोभी में सुखी घास अथवा प्लास्टिक मल्चिंग करके मृदा नमी संरक्षण एवं खरपतवार नियंत्रण किया जा सकता है।
2-	शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन	वर्तमान मौसम रबी फसलों की बुआई के लिए उपयुक्त हैं। फसलों की समय पर बुआई सुनिश्चित करें। रबी फसलों की उपयुक्त समय पर बुआई सुनिश्चित करें । • बुआई के लिए उन्नत किस्मों के बीजों का ही चयन करें। • बीज हमेशा विश्वसनीय स्रोत से लेना चाहिए । • बीजों की बुआई उपयुक्त नमी की दशा में तथा खादों.उर्वरकों की समुचित मात्रा के साथ करें ।. • बीजों की बुआई बीजोपचार के बाद ही करे . गेहूँ की फसल में एजोटोबेक्टर दुवारा बीज का उपचार किया जाना लाभदायक होता है । • गेहूँ में फसलों की बुआई के दो.तीन दिन के भीतर पेंडीमिथलीन न।मक दवा का ३.3 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से उचित नमी की दशा में छिड़काव करनी चाहिए। इससे प्रारंभिक अवस्था में फसल – खरपतवार प्रतिस्पर्धा को कम किया जा सकता है । • गेहूँ की कड़ी फसल में खरपतवार नियंत्रण हेतु बुआई के ३० दिन बाद सल्फोसल्फ्युरोंन + मेत्सल्फ्युरोंन (टोटल) १६ ग्राम प्रति एकड़ की दर से १५० लीटर पानी में घोल बनाकर छिड्काव करें । • खरपतवारों के प्रभावी नियंत्रण के लिए खरपतवारनाशी का छिड़काव हमेशा फ्लैटफैन नाजेल (कट नाजेल) से करना चाहिए । • फसलों को प्रारंभिक अवस्था में खरपतवारों की प्रतिस्पर्धा से बचने के लिए समय से बोई गई दलहनी, तिलहनी फसलों में निराई गुराई अवस्य प्रारम्भ कर देना चाहिए । • दलहनी फसलों में घास कुल के खरपतवार के नियंत्रण हेतु क्युजालोफोप इथाइल 5% (टर्गासुपर) के 1000 ग्राम मात्रा का 500 लीटर पानी में घोल बनाकर 20- 22 दिन की अवस्था पर छिड्काव करें । • आवस्यक्तानुसार खरी फसल में नमी बनाये रखने हेतु उचित सिंचाई का प्रबंध करना चाहिए । • सरसों की फसल में विरलीकरण दुवारा पौधे से पौधे की दुरी १० से १५ सेमी सुनिश्चित

		करना चाहिए । बुंदेलखंड की मृदाओं में कार्बनिक कार्बन व फास्फोरस की कमी है तथा इसका उचित प्रबंधन तिलहन व दलहन फसलों के लिए आवश्यक है. गोबर की खाद का 5 टन/ हेक्टेयर अथवा 2 टन / हेक्टेयर वर्मी कम्पोस्ट का प्रयोग बुआई से 10-20 दिन पहले करें. ➢ **सरसों**: सिंचित दशा में 80:40:40:20 नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश और सल्फर (की.ग्रा./ हे) की दर से करें. असिंचित क्षेत्र में 50:25:25:20 (की .ग्रा./ हे) की दर से नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश व सल्फर का प्रयोग करें. सिंचित क्षेत्रों में फास्फोरस, पोटाश व सल्फर की पूरी मात्रा तथा नत्रजन की आधी मात्रा बुआई के समय प्रयोग करें तथा नत्रजन की शेष आधी मात्रा प्रथम सिंचाई के समय प्रयोग करें. असिंचित क्षेत्रों में उर्वरकों की पूरी मात्रा बुआई के समय प्रयोग करें. ➢ **दलहन**: चने के बीज को राइज़ोबियम कल्चर से उपचारित करने के पश्चात बुआई करें. 20:60:20 (की.ग्रा./ हे) की दर से नत्रजन फास्फोरस व पोटाश का प्रयोग बुआई के समय करें. **गेंहू**–गेंहू की फसल में 120.–60–40 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से नत्रजन फास्फोरस तथा पोटाश का प्रयोग करना चाहिये। फास्फोरस तथा पोटाश की सम्पूर्ण मात्रा तथा नत्रजन की आधी मात्रा बोवाई के समय प्रयोग करना चाहिये।शेष आधी मात्रा बोवाई के 20–25 दिन बाद क्रन्तिक जड़ निकलने की अवस्था पर करना चाहिये। यदि खेत में जिंक की कमी हो तो जिंक सल्फेट 20–25 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से बोवाई के समय प्रयोग करना लाभदायक होता
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	➢ पशुओं को सूखे, हवादार एवं साफ जगह पर रखना चाहिए। ➢ गायो का टीकाकरण करायें तथा खुरपका मुँहपका रोग के लिए भैंसो तथा बकरियों को टीका लगवाएं। ➢ जानवरों में टिक्स और माइट्स को नियंत्रित करने के उपाय लागू करे, जिससे पशुओ की उत्पादकता उच्च स्तर पर बनी रहे। ➢ पोल्ट्री शेड मे मुर्गीयो की बिछावन को गीला होने पर बदल दे जिससे उनमे बिमारियो का खतरा न हो। ➢ दुधारू पशुओ की उत्पादकता को बनाये रखने तथा प्रजनन सम्बन्धी समस्याओ से बचाव हेतु प्रति पशु 50 ग्राम खनिज मिश्रण देंवे। ➢ पशुओ की शारीरिक आवश्यकताओ हेतु एवं पोषक तत्वों की आवश्यकता के अनुसार हरा चारा 15 किग्रा/पशु/दिन तथा दाना मिश्रण उनकी आवश्यकता के अनुसार प्रदान करे। ➢ मौसम की स्थिति को देखते हुए पशुओं में एचएस रोग, लंगड़ी बुखार, खुरपका और मुंहपका रोग फैलने की संभावना है, नियंत्रण के लिए पशुओं को टीका लगवाएं। ➢ नवजात पशुओं को बारिश एवं ठण्डी हवा से बचाएं तथा उन्हे सूखे व साफ फर्श पर बांधे।
4–	**कीट-प्रबंधन**	➢ ब्यूवेरिया बैसियाना 2.5 किग्रा0 मात्रा को 60–75 किग्रा0 सड़ी हुई गोबर की खाद में मिला कर 8–10 दिन छाया मे रखने के उपरान्त बुवाई के पूर्व अन्तिम जुताई के समय खेत में मिला देने से भूमिगत कीटों तथा दीमक व

		सफेद गिडार कीट का प्रबन्धन किया जा सकता है। नीम की खली 10 कु0 प्रति हे0 की दर से बुवाई से पूर्व मिलाने से खेत में दीमक के प्रकोप में कमी आती है। ➢ राई/सरसों में आरा मक्खी कीट के नियंत्रण हेतु सिंचाई करें व मैलाथियान 5 प्रतिशत डब्ल्यू0पी0 की 20–25 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से खेत में बिखेरें। क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 की 1.25 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से छिड़काव करें। ➢ सब्जियों में (टमाटर, बैंगन, फूलगोभी व पत्तागोभी) शीर्ष एवं फल छेदक एवं फूलगोभी, पत्तागोभी में डायमंड बैक मोथ की निगरानी हेतु फेरोमोन प्रपंच 3–4/एकड़ लगाए। सब्जियों में कीटों के नियंत्रण हेतु नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए। बैगन की फसल में कलंगी एवं फल बेधक कीट के नियंत्रण हेतु 10 मीटर के अन्तराल पर प्रति हेक्टेयर में 100 फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क नर कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए व क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल कीटनाशी की 100 मिलीलीटर मात्रा को 250 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से 10 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करना चाहिए।
5–	**पादप रोग प्रबंधन**	➢ जो किसान भाई रबी मौसम में दलहनी फसलों चना, मटर एवं मंसूर की फसल उगाना चाहते है सन्तुति किस्मों के प्रमाणित बीज, बीज उपचार हेतु कवकनाशी अथवा जैव कवकनाशी व राइजोबियम कल्चर प्रबन्ध करले । बुवाई से पूर्व बीज को वीटावैक्स पावर (थिरम 37.5% + 37.5% कारवाक्सिन) अथवा ताकत (कैप्टान 70% + हेक्साकोनाजोल 5%) 2 ग्राम प्रति किलो ग्राम बीज की दर से बीजोंउपचार करके बोयें अथवा जैविक कवकनाशी ट्राइकोडरमा 5 ग्रा0 प्रति किग्रा0 बीज की दर उपचारित करें । इसके बाद बीज को फसल विशेष राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें इसके लिए 1 लीटर पानी में 150 ग्राम गुड अथवा 50 ग्राम चीनी मिलाकर गरम कर लें उसके बाद ठण्डा होने पर 1 पैकट (200ग्राम) राइजोबियम कल्चर मिला दें। फिर 10 किग्रा. बीज को एक बाल्टी या घड़े में डाले तथा उसके के ऊपर राइजोवियम कल्चर के घोल को डालें तथा अच्छी तरह से मिला दें। फिर बीज को छाया में सुखा लें। एक पैकेट 200 ग्राम कल्चर 10 किग्रा. बीज उपचार के लिए पर्याप्त होता है। अथवा आजकल बाजार में तरल कल्चर उपलब्ध उक्त राइजोवियम कल्चर की 5 मि0ली0 मात्रा को

		प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारीत करते हैं। बीज को किसी बर्तन में टब इत्यादि में रख लेते हैं फिर राइजोवियम कल्चर की 5 मि0ली0 मात्रा को प्रति किलोग्राम बीज की दर से आवश्यक मात्रा को बीज में भलीभॉति मिलाकर छाया में सुखा लेते हैं फिर बीज की बुवाई करते हैं। ➢ गेंहू की फसल को कंडुवा आदि रोग से बचाव हेतु बुआई से पूर्व बीज को वीटावैक्स पावर (कार्बाक्सिन 37.5 % + थीरम 37.5%) से दो ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करके बोयें ।
6.	**बागवानी. प्रबंधन**	**कुछ सामान्य ध्यान देने वाली बातें** ❖ फल पौधों का रोपण इस माह के मध्य तक पूरा करें। ❖ वायु अवरोधक बीजू पौधें इस माह में भी लगा सकते हैं। ❖ पहले से लगे वायु–अवरोधक वृक्षों की फैली शाखाओं को काट दें। ❖ मूलवृत पौधों से फुटान को ध्यानपूर्वक हर 15 दिन बाद हटा दें। ❖ छोटे पौधों को सीधा रखने के लिए बंछटी का सहरा दें। ❖ गमलों में खुदाई गहरी करें ताकि खरपतवार अच्छी तरह से गहराई से निकल सकें, परन्तु जड़ों को तथा तने को बचा लें। ❖ नींबू प्रजाति के कमजोर पौधों में 50 ग्राम यूरिया सिंचाई के तुरन्त बाद प्रथम सप्ताह में दें। ❖ वाटर स्प्राउट तथा सकर्स को काट दे। कटे हिस्सों पर बोंडेक्स पेस्ट का लेप करें। ❖ नये तथा पांच साल से कम आयु के पौधों में यदि चाहे तो चने की फसल ली जा सकती है। ❖ खुली सिंचाई हेतु फलदार वृक्षों में सिंचाई एक से सवा महीनें के अंतराल पर करें। ❖ पांच साल से ऊपर के बाग में गेहूं की फसल न करें। ❖ बाग में रोगग्रस्त गिरे हुए फलों को अवश्य निकाल कर फेंके। **आम में मुख्य कृषि कार्य** ❖ आम के बाग में जुताई करके खरपतवार नष्ट कर दें.। ❖ आम में परागण मधुमक्खियों द्वारा होता है । अतः फल आने के समय कीटनाशक दवाओं का प्रयोग न करें अन्यथा फलन प्रभावित होती है । ❖ यदि पत्ती खाने वाले कीड़ों का प्रकोप दिखाई दे तो उसके नियंत्रण के लिए मोनोक्रोटोफॉस या क्कीनालफास दवा का 1.5 मि.ली. मात्रा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिनों के अंतराल पर 2 छिड़काव करें । ❖ आम के पौधों मे जहां गों्द निकलने के लक्षण दिखें उन्हे खूरच कर साफ करे तथा घाव पर बोरडेक्स दवा का लेप कर दें। ❖ आम के पेड पर यदि शाखाओं पर शीर्षरंभी क्षय बीमारी के लक्ष्ण दिखाई दें

		तो उन शाखाओं को काटकर 0.3 प्रतिशत कॉपर ऑक्सीक्लोराईड के घोल का 15 दिन के अन्तराल पर छिडकाव करें। ❖ मिलीबग कीट आम के लिए घातक होते हैं.। इनसे बचाव के लिए पेड़ों के तनों के चारों तरफ पॉलीथीन की करीब 30 सेंटीमीटर चौड़ी पट्टी बांध कर उसके सिरों पर ग्रीस लगा दें। **केले मे मुख्य कृषि कार्य** ❖ केले में यदि बीटल कीट दिखाई दे तो इसके रोकथाम के लिये डाइमेथोएट १.५ मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करे । ❖ लीफ स्पाट रोग के रोकथाम हेतु डाईथेन एम –45 के 2 ग्राम अथवा कॉपर ऑक्सीक्लोराइड के 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल 2–3 छिड़काव 10–15 दिन के अंतर से करना चाहिए। **पपीता मे मुख्य कृषि कार्य** ❖ नमी की कमी अथवा अधिकता के कारण फल उत्पादन कम हो जाता है । इसलिए जाड़े के दिनों में 15 दिन के अंतराल पर तथा गर्मी के दिन में 7–10 दिन के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिए। जब पेड़ फल से लदा हो तो उस समय सिंचाई करना अति आवश्यक है। **अनार मे मुख्य कृषि कार्य** ❖ फल पकने के समय हल्की व नियमित सिंचाई करें । ❖ फल मक्खी के नियंत्रण के लिए डाईमिथोएट 30 ई.सी. का 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के साथ छिङकाव करे । दूसरा छिङकाव इसके 15 दिन बाद करे। **बेर मे मुख्य कृषि कार्य** ❖ बेर मे फलूों व अपरिपक्व फलों के गिरने को रोकने व उत्तम गुणवत्ता युक्त अधिक उपज के लिए नियमित रूप से 10 से 12 दिन के अंतराल पर हल्की सिंचाई करें । ❖ इस माह में बेर में नत्रजन की 50 प्रतिशत मात्रा जिसमें 500 ग्राम यूरिया प्रति पौघा फल मटर के आकार की अवस्था पर देकर तुरंत बाद सिंचाई करें । ❖ फल झड़ने की रोकथाम हेतु प्लानोफिक्स 4 मिलीलीटर प्रति 15 मिलीलीटर पानी में मिलाकर 15 दिन के अंतराल पर स्प्रे करना चाहिए। ❖ फल मक्खी के नियंत्रण के लिए डाईमिथोएट 30 ई.सी. का 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के साथ छिङकाव करे । दूसरा छिङकाव इसके 15 दिन बाद करे। ध्यान रहे कि छिङकाव से 4 से 5 दिन बाद ही फलों की तुड़ाई करे। **आंवला मे मुख्य कृषि कार्य** ❖ फल सड़न को रोकने के लिए फल तोड़ने के 15 दिन पूर्व 0.1 प्रतिशत कार्बेन्डाजिम का छिड़काव करना चाहिए।
7.	**वानिकी प्रबंधन**	➢ खेतों में कृषि वानिकी के अंतर्गत लगाए गए पेड़ों की उचित देखभाल करते हुए आवश्यकतानुसार निराई गुड़ाई और सिंचाई करें ताकि पेड़ों में अच्छी वृद्धि हो सके। ➢ कृषि वानिकी प्रणाली के अंतर्गत लगाए गए इमारती लकड़ी की प्रजातियों जैसी

		सगवान, यूकेलिप्टस, अंजन, गम्हार, नीम, मालाबार नीम, कैजुअरिना की निचली शाखाओं को तेज आरी से काटें ताकि गाँठ मुक्त गुणवत्ता वाली लकड़ी प्राप्त हो और कृषि फसल पर छाया का प्रभाव कम किया जा सके। यह पेड़ों को तेज हवा के नुकसान से भी बचाता है। ➢ वानिकी पौधशाला में पर्याप्त धूप बनाए रखने के लिए छायादार पेड़ों की निचली शाखाओं की छंटाई की जा सकती है। ➢ वानिकी पौधशाला में पर्याप्त धूप बनाए रखने के लिए छायादार पेड़ों की निचली टहनियों की छटाई करें । ➢ नर्सरी में नियमित सिंचाई करने की सलाह दी जाती है।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार	7. डॉ मयंक दुबे
2. डॉ दिनेश साह	8. डॉ अमित मिश्रा
3. डॉ ए.सी. मिश्रा	9. डॉ दिनेश गुप्ता
4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव	10. डॉ पंकज कुमार ओझा
5. डॉ राकेश पाण्डेय	11. डॉ सुभाष चंद्र सिंह
6. डॉ विवेक सिंह	